SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

मुक्तिबोध की शिल्प–चेतना

सुशांत चक्रवर्ती, (Ph.D.), हिंदी विभाग
विवेकानंद महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
सुशांत चक्रवर्ती, (Ph.D.), हिंदी विभाग
विवेकानंद महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 10/07/2021
Revised on : -----
Accepted on : 17/07/2021
Plagiarism : 02% on 10/07/2021

शोध सार

प्रयोगवाद के बाद हिन्दी साहित्य में काव्य जगत् में पुनः परिवर्तन देखने मिलता है। नये की अकुलाहट तो प्रत्येक युग में हमेशा ही विद्यमान रही है, पर नयी कविता इसलिए नयी है क्योंकि इसमें नये अवबोधों, नये मूल्यों और नये–शिल्प विधानों का अन्वेषण किया गया है। नयी कविता जीवन से जुड़ी कविता है। आज के समाज, आज के परिवेश, आज के जीवन को स्वामित्व करने वाली कविता है।

मुख्य शब्द

प्रयोगवाद, मुक्तिबोध, संस्कृतिक चेतना, छायावाद.

नयी कविता में दो तत्व प्रमुख है– अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि। वह अनुभूति क्षण की हो या समूचे काल की, किसी सामान्य व्यक्ति की हो या विशिष्ट पुरूष की, आशा की हो या निराशा की, अपनी सच्चाई में कविता के लिए और जीवन के लिए भी अमूल्य है। नयी कविता में बुद्धिवाद नवीन यथार्थवादी दृष्टि के रूप में भी है और नवीन जीवन चेतना की पहचान के रूप में भी।

नयी कविता में जिन कवियों ने समाज के संत्रास, व्यक्ति की व्यैक्तिकता, निराशा और इस वैराग्य कुंठा से बाहर निकालने के लिए आलोक की तलाश की है, उनमें मुक्तिबोध का नाम उल्लेखनीय है। सन् 1917 में ग्वालियर में जन्में मुक्तिबोध का व्यक्तित्व बहुविध है। वे अध्यापक, पत्रकार, विशिष्ट विचारक कवि, कथाकार और समीक्षक के रूप में जाने जाते हैं। 'मुक्तिबोध एक ऐसे कवि हैं, जिनका अनुभव–जगत् व्यापक है, जो अपने परिवेश के जीवन से बहुत गहन भाव से जुड़े हुए हैं। उनकी प्रगतिवादी दृष्टि परिवेश बोध, सामाजिक चिंतन और अनुभव – वैविध्य को और बल देती है। अतः कहा जा सकता है कि बाद में जीवन की बहुविध छवि को लेकर

विकसित होने वाली नयी कविता के अग्रज कवि सच्चे अर्थो में मुक्तिबोध ही है।'

मुक्तिबोध का काव्य–संसार सन् 1937 से सन् 1964 तक की कालावधि में फैला हुआ है। उनके रचना–संसार में यह कालावधि अपने व्यतीत और आगत के स्वप्नों सहित मौजूद है।

किसी भी रचनाकार का मूल्यांकन दो–चार रचनाओं के आधार पर नहीं किया जा सकता। मुक्तिबोध के सम्बन्ध में यह महत्वपूर्ण बात है कि उनका कोई भी काव्य–संग्रह उनके जीवनकाल में प्रकाशित नहीं हुआ था। उनके जीवन–काल में उनके दो छोटे–छोटे समीक्षा ग्रन्थ (नई कविता का – आत्म संघर्ष तथा अन्य निबन्ध तथा कामायनी एक पुनर्विचार) ही प्रकाशित हुए थे और तार–सप्तक में कुछ कविताएँ प्रकाशित हुई थी, जिसके कारण उनके बारे में कई प्रकार की गलत भ्रान्तियां बन गई और उस समय उनकी कविता की आवाज़ भी दब गई।

मुक्तिबोध का प्रथम काव्य संग्रह 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' सन् 1964 में प्रकाशित हुआ था। मुक्तिबोध तब अचेनावस्था में थे। श्रीकांत वर्मा ने इस संग्रह की भूमिका में लिखा है – 'मुक्तिबोध, जो कविताओं को अपनी जिंदगी से भी अधिक सहेजते थे इस समय अपना संग्रह देख सकने में असमर्थ है, बेहोश है ..... यह विश्वास करते हैं वे पूरी तरह निरोग होंगे और अपनी कविताओं का पहला संकलन देख सकने में समर्थ होंगे' लेकिन वे अपनी कविताओं का संकलन नही देख पाए। इन कविताओं का चयन भी स्वयं मुक्तिबोध का न होकर स्वयं संपादक का है, सिवाय दो कविताओं के जिन्हें वे एक के बाद एक शामिल करना चाहते थे। 'चंबल की घाटी' और 'अंधेरे में' कविताओं के लिए ऐसा मशवरा उन्होंने संपादक को दिया था। मुक्तिबोध के काव्य कृतित्व पर यदि समग्र देखा जाए तो उसका महाकाव्यात्मक चरित्र हमें दिखाई देता है। उनकी कल्पना की उदान्नता और विराट अनुभव की सघनता, विचारों की संपन्नता और आत्म संघर्ष की निरंतरता ऐसे तत्व है जो उनके काव्य प्रयत्न के अंग रहे। मुक्तिबोध के समस्त काव्य सृजन को ही नेमीचंद जैन ने जिस विकास क्रम में प्रस्तुत किया है वह उचित ही है। वह मुक्तिबोध की रचनाओं की विशेषता को ठीक ढंग से रेखांकित करता है। रचनावली के प्रथम भाग में मुक्तिबोध की कविताओं को 3 खंडों में विभाजित किया गया है:

1. प्रारंभिक संरचनाएँ – सन् 1938 से सन् 1939।
2. कविताएँ – सन् 1960 से सन् 1948।
3. कविताएँ – सन् 1949 से सन् 1956।

रचनावली के दूसरे भाग में सन् 1957 से सन् 1969 तक की कविताएं संकलित है।

मुक्तिबोध ने तार सप्तक के वक्तव्य मे अपनी इन कविताओं के संदर्भ में कहा है कि 'मेरी वे कविताएं अपना पथ ढूंढने वाले बेचैन मन की अभिव्यक्ति है। उनका सत्य और मूल्य उसी जीवन–स्थिति में दिया हुआ है।' उनकी कविताओं में पहले वर्णानात्मकता अधिक थी, फिर कुंठावाद, निराशावाद और फिर मराठी उपन्याओं से प्रभावित होकर ही वे मार्क्सवाद तक आते है। वे अपने अनुभवों को सामाजिक संदर्भ में रखकर ही जांच से परखते हैं। यही कारण है कि वे केवल साहित्यिक आलोचना ही नहीं बल्कि युग की समस्याओं के आलोचक भी हो सके। इस संदर्भ में उनकी 'दुःख सुख' कविता का कुछ अंश दृष्टव्य है:

'दुख में ही सुख कर लो यारो
दिल में पत्थर भर लो यारो
जलती रहे चिता सूने में
हम उसको समझेंगे होली
जो सुख को मारो गोली
आंखे से चुपचाप सरकने
वाले आंसु पत्थर के है
हम मजबूत हंसों ने इनसे

सुख की सोना–चांदी तोली'

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि मुक्तिबोध की प्रारंभिक दौर की कविताएं छायावाद की अनुकरण मात्र ही नहीं थी उन्हें उस समय भी नव भविष्य के प्रति गहरी अवस्था थी। विकसित मुक्तिबोध के बीज हमें उनकी इन्हीं कविताओं में मिलते हैं। 'जीवन यात्रा', 'मरण रमणी' आदि कविताओं में भी हम उसके अंकुर देख सकते हैं।

मुक्तिबोध की इस दौर की कविताओं में वर्ग–बोध स्पष्ट दिखाई देता है। वर्ग बोध की अपेक्षा वर्ग संघर्ष कहा जाए तो उपयुक्त होगा, क्योंकि इसमें निम्न वर्ग को त्रासद दुनिया ही चित्रित नहीं है बल्कि पूंजीवादी और सामंतवादी शक्तियों के प्रति आक्रोश व्यक्त हुआ है।

'सज्जनों के सांस्कृतिक आकारों को देखकर'
निहार उस क्रोध को
जो मात्र एकांत में ही
शोषक के अत्याचारी जाल पर गरजता
निहार वह आलोचक नपुंसक
जो आत्मा को बेच
आत्म–विरोध सिरजती है'।

अंधेरे में, कविता में भी इस प्रकार के संकेतन है। प्रोफेशन वाला यह दृश्य जिसमें बैंडदल के साथ संगीत धारी फौज भी शामिल है। आश्चर्य की बात यह है कि इसमें लेखकगण, कविगण, नेतागण आलोचक सभी शामिल है और नगर का कुख्यात हत्यारा डोभाजी उस्ताद भी उसमें शामिल है। इसे कवि ने देख लिया है इसकी उसे सजा मिलेगी।

'मारो गोली। दागो रचाले को एकदम। दुनिया की नजरों से हटकर छिपे तरीकों से हम जा रहे थे कि आधी रात अंधेरे में उसने देख लिया हमको। वह जान गया सब, मार डालो उसको खत्म करो एकदम।'

उन्होंने पूंजीवादी षडयंत्रों को खुली आंखो से देखा है। गहन मृतात्मा इसी नगर की। हर रात में जुलुस में चलती। परंतु दिन में बैठती हूं मिलकर करती हुई षडयंत्र। विभिन्न दफ्तरों, कार्यालयों, केंद्रों में घरों में।

मुक्तिबोध लंबी कविताओं के कवि है। 'चाँद का मुख टेढ़ा है', 'चंबल की घाटी में', 'अंधेरे में' जैसी कविताएं मुक्तिबोध की काव्य प्रतिभा का वास्तविक प्रतिनिधत्व करती है। लंबी कविताएं में उन्होंने फैन्टेसी शैली का आश्रय ग्रहण किया है। उनकी फैन्टेसियाँ उनके अनुभवों की प्रतिनिधि होकर आती है। उनकी इस तरह की कविताओं में फैन्टेसियों की एक अबाध श्रृंखला मिलती है। 'मुक्तिबोध क्षण से संबंध माना है अर्थात् उनका काव्य उनके अनुभवों का उद्‌घास मात्र नहीं रह जाता अपितु किसी रासायनिक प्रक्रिया से उन अनुभवों के रचनाकार का व्यक्तित्व उसकी जीवन दृष्टि सब जुड़ जाती है। ये फैन्टेसियां आधुनिक जीवन की भयावतः को उसकी समस्त कदर्थता में चित्रित करती है।' (नयी कविता – डॉ. कान्ति कुमार पृ. 48 मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी प्रथम संस्करण–1972)

मुक्तिबोध में प्रगतिशील जीवन मूल्यों की कलात्मक प्रतिष्ठा है और विशिष्ट सांस्कृतिक चेतना भी। सीधे सरल ढंग से अपनी बात करने की आदत मुक्तिबोध में नही है। वे अपने अनुभव को जटिल बिम्बों, प्रतीकों एवं फेंटेसी के अंतर्गत निहित करते हैं। भाषा की यह संश्लिस्ट ओर जटिल बनावट आधुनिक भावबोध की जटिलता को बारीकी से व्यक्त करने के लिए मुक्तिबोध को अनिवार्य प्रतीत होती है। (आधुनिक कवि– विश्वंभर मानव पृ. 213)

अनुभव वैविध्य तथा वैचिन्य के साथ अकेले ही संघर्षशील मनुष्य की चेतना, मुगीन विसंगतियों तथा भयावह स्थिति, मुक्तिबोध की कविता में एकदम नये आकार तथा रूप में प्रस्तुत होती है। फेंटेसी मिथक तथा प्रतीकों की निर्मित उनकी कलात्मकता कुशलता है। मुक्तिबोध की काव्य यात्रा भयावह अंधेरे होकर प्रकाश के बिंदु पर समाप्त होती है।

निष्कर्ष

महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि मुक्तिबोध की कविता ही नहीं, उनके जीवन और विचारों ने भी साठोतरी और विशेष रूप से आठवे दशक की पीढ़ी को बेहद गहरे और मानवीय ढंग से प्रभावित किया है, जिसका सबसे बड़ा परिणाम इस रूप से हुआ है कि निजी और कौटुम्बिक अनुभूतियों का दायरा बढ़ा। निजता के साथ उसमें सामाजिकता का नव घुल–मिल गया। आत्मा के सामाजिक अंतःकरण में संस्कारित होने जैसी प्रक्रिया घटित हुई। इस सबका श्रेय मुक्तिबोध को भी जाता है।

संदर्भ सूची

1. नगेन्द्र *'हिन्दी साहित्य का इतिहास'* पृष्ठ संख्या 613।
2. वर्मा, श्रीकांत, (1964) *'चाँद का मुँह टेढ़ा'* पृष्ठ संख्या 08।
3. माधव, मुक्तिबोध गजानंद, (1980) *'मुक्तिबोध रचनावली भाग–1'* पृष्ठ संख्या 285
4. माधव, मुक्तिबोध गजानंद, (1980) *'मुक्तिबोध रचनावली भाग–2'* पृष्ठ संख्या 360
5. माधव, मुक्तिबोध गजानंद, (1980) *'मुक्तिबोध रचनावली भाग–2'* पृष्ठ संख्या 367
6. मानव, विश्वंभर (2008), *'आधुनिक कवि'* संस्करण लोक भारती प्रकाशक– इलहाबाद पृष्ठ संख्या – 213 (प्रथम संशोधित संस्करण)
7. जैन, नेमीचंद, (1980) *''मुक्तिबोध रचनावली''* (खण्ड 6), राजकमल प्रकाशन प्रा. लिमिटेड।

****